

News item/letter/article/editorial published on May-21-05-2015 in the

Hindustan Times

Statesman

The Times of India (N.D.)

Indian Express

Tribune

Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)

Punjab Keshari (Hindi)

The Hindu

Rajasthan Patrika (Hindi)

Deccan Chronicle

Deccan Herald

M.P.Chronicle

A a j (Hindi)

Indian Nation

Nai Duniya (Hindi)

The Times of India (A)

Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

PM seeks report on irrigation scheme

STATESMAN NEWS SERVICE

New Delhi, 20 May

Q-2/

On the eve of the completion of one year of his government, Prime Minister Narendra Modi has sought a detailed report from the agriculture ministry on his pet irrigation scheme, Pradhan Mantri Gram Sichai Yozana. "For the last few days officials are on the job and a proper and detailed presentation is being prepared after taking inputs from important stakeholders and the state governments," an official said.

Sources said the ministry is in appreciative mood on the feedback it has received on the scheme. "Reports from various states on their own respective models of irrigation schemes have been found very helpful in preparing the presentation," sources said.

However, her hectic schedule and involvement in bigger projects, including the ambitious river linking and 'Clean Ganga project,' had forced Union Water Resources Minister Uma Bharti to give up the Pradhan Mantri Gram Sichai Yozana and it has been now "sent back" to the agriculture ministry.

The scheme was announced in the budget 2014-15 by finance minister Arun Jaitley with an allo-

cation of ₹10,000 crore. However, Ms Bharti had requested the Prime Minister to shift the scheme. "Finally the project was passed on to the agriculture ministry where it was initially mooted after the formation of the Modi government," sources said. Under the new concept paper prepared by the agriculture ministry under Radha Mohan Singh, a confidant of the Prime Minister, the government can ensure involvement of Panchayati Raj institutions for greater participation of people at the planning level, officials said.

The micro irrigation project is expected to play a game-changer for water-starved farmers in Bundelkhand, Vidarbha and parts of water-starved western India, including Rajasthan and Gujarat, sources said.

News item/letter/article/editorial published on May 21.05.2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

गंगा की शुद्ध, अविरल धारा का सपना

सफाई अभियान में सरकार के साथ-साथ वैज्ञानिकों, विशेषज्ञों और हर नागरिक को जुटना होगा

नव-21-5-15

कलराज मिश्र



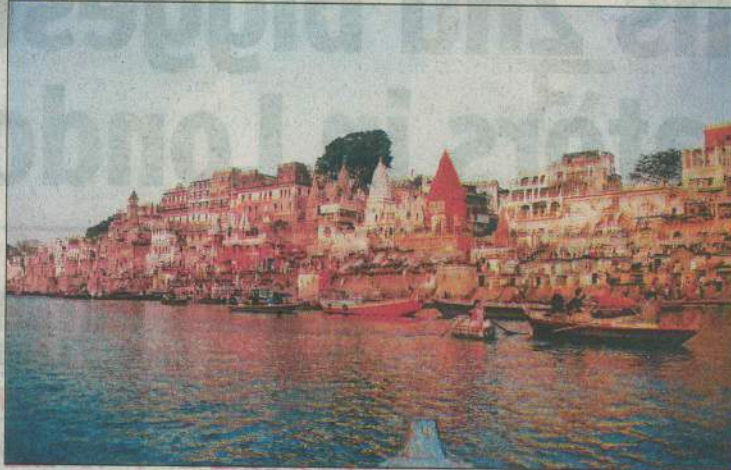
गंगा भारत की जीवनधारा है। यह नदी ही नहीं, देश की आस्था, संस्कृति, परंपरा, सभ्यता का स्वर्णिम इतिहास और प्रेरणा है। विशाल जलराशि समेटे गंगा भारत की शाश्वत पहचान, आजीविका का उपक्रम और मर्यादा है। पर अभी वह अपने अस्तित्व के लिए जूझ रही है। आज गंगा विश्व की छठी सर्वाधिक प्रदूषित नदी बन चुकी है। गंगा में उद्योगों से 80 प्रतिशत, नगरों से 15 प्रतिशत तथा पर्यटन व धार्मिक कर्मकांड से 5 प्रतिशत प्रदूषण होता है। आबादी की बढ़ के साथ पर्यटन, नगरीकरण और औद्योगिक विकास ने प्रदूषण के स्तर को आठ गुना बढ़ाया है।

गंगा को दूषित करने का उपक्रम पिछले चालीस वर्षों से जारी है। इसके कछारी क्षेत्र में करीब एक करोड़ टन उर्वरक प्रयोग में लाए जाते हैं, जिसमें पांच लाख टन बहकर गंगा में मिल जाता है। इसके अलावा 1500 टन कीटनाशक भी मिलता है। सैकड़ों टैन्कीज, कारखानों, कपड़ा मिलों, डिस्टिलरियों, बूचड़खानों और अस्पतालों से निकला द्रव और रसायन भी गंगा में मिलता है। अनुमान है कि 400 करोड़ लीटर अशोधित अपद्रव्य, 900 करोड़ अशोधित गंदा पानी गंगा में जाता है।

गंगा, मूर्ति विसर्जन और दाह संस्कार का धर्मक्षेत्र बन चुका है।

► मोक्ष की नई परिभाषा

ऋषिकेश में गंगा पहाड़ों से उतरकर मैदानों में आती है, उसी के साथ प्रदूषण की शुरुआत हो जाती है। हरिद्वार के पहले ही गंगा का पानी निचली गंगा नहर में भेजकर उत्तर प्रदेश की सिंचाई की व्यवस्था की जाती है। नरौरा के परमाणु संयंत्र के लिए गंगा के पानी का उपयोग होता है, जिससे रेडियोधर्मिता पैदा



बनारस में होगी संकल्प की परीक्षा

गंगा प्रदूषण में उद्योगों का हिस्सा 80 प्रतिशत, नगरों का 15 प्रतिशत तथा पर्यटन व धार्मिक कर्मकांड का 5 प्रतिशत है

होने की आशंका रहती है। प्रदूषण की चरम स्थिति कानपुर में है। चमड़ा शोधन और उससे निकला प्रदूषण यहां सबसे गंभीर है। उस समूचे क्षेत्र में गंगा के पानी के साथ भूमिगत जल भी प्रदूषित है। इलाहाबाद में यमुना, गंगा से मिल जाती है। यहां का पवित्र संगम, और कुंभ मेला आस्था का बहुत बड़ा केंद्र है। पर करोड़ों लोगों द्वारा स्नान, शवदाह, पिंडदान, अस्थि विसर्जन के कारण गंगा का प्रदूषण सभी मान्य सीमाएं पार कर जाता है।

बनारस में गंगातट पर लाखों शवों का अंतिम संस्कार होता है। इससे होने वाले प्रदूषण से मुक्ति के लिए विद्युत शवदाह अच्छा तथा इकोफ्रेंडली विकल्प है। हमारी धार्मिक

मान्यताएं, विश्वास और मृतक से भावनात्मक संबंध विद्युत शवदाह को लेकर असमंजस पैदा करते हैं। पर अब मोक्ष, मुक्ति और परम शांति के अर्थों को फिर से परिभाषित करना होगा। गंगा को प्रदूषणमुक्त करने के प्रयास पहले भी हुए हैं। 1979 में केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण मंडल ने प्रदूषण की विकरालता को समझते हुए एक समीक्षा की थी। 1985 में गंगा एक्शन प्लान का प्रारंभ हुआ, पर गंगा की हालत नहीं बदली। गंगा बेसिन अथॉरिटी की स्थापना 2009 में हुई पर सकारात्मक नतीजे नहीं मिले।

एनडीए सरकार ने इसे गंभीरता से लिया है। इसने इसके लिए एक अलग मंत्रालय बनाकर अपनी प्रतिबद्धता दर्शा दी है। सरकार का लक्ष्य है 2020 तक गंगा को प्रदूषण मुक्त बनाना। यह बहुत बड़ी चुनौती है। इसके लिए पर्याप्त बजट, पारिस्थितिकी का संरक्षण तथा समुदाय की प्रभावी भागीदारी जैसे पक्षों पर भी ध्यान जरूरी है। सरकार ने 2014 में 'नमामि गंगे' परियोजना की घोषणा की। इसके अंतर्गत 2037 करोड़ रुपये खर्च होंगे। किनारों के बड़े नगरों में घाटों के विकास पर 100 करोड़ खर्च

किए जाएंगे। इसमें अनिवासी भारतीयों से भी सहयोग मांगा गया है। शहरी विकास मंत्रालय ने 'निर्मल धारा' योजना के अंतर्गत गंगा तट पर बसे 118 नगरों में जल-मल शुद्धिकरण के लिए इन्फ्रास्ट्रक्चर विकास की योजना बनाई है, जिस पर 51000 करोड़ रुपये खर्च होंगे। गंगा के प्रवाह का जल परिवहन के लिए भी उपयोग करने की योजना है।

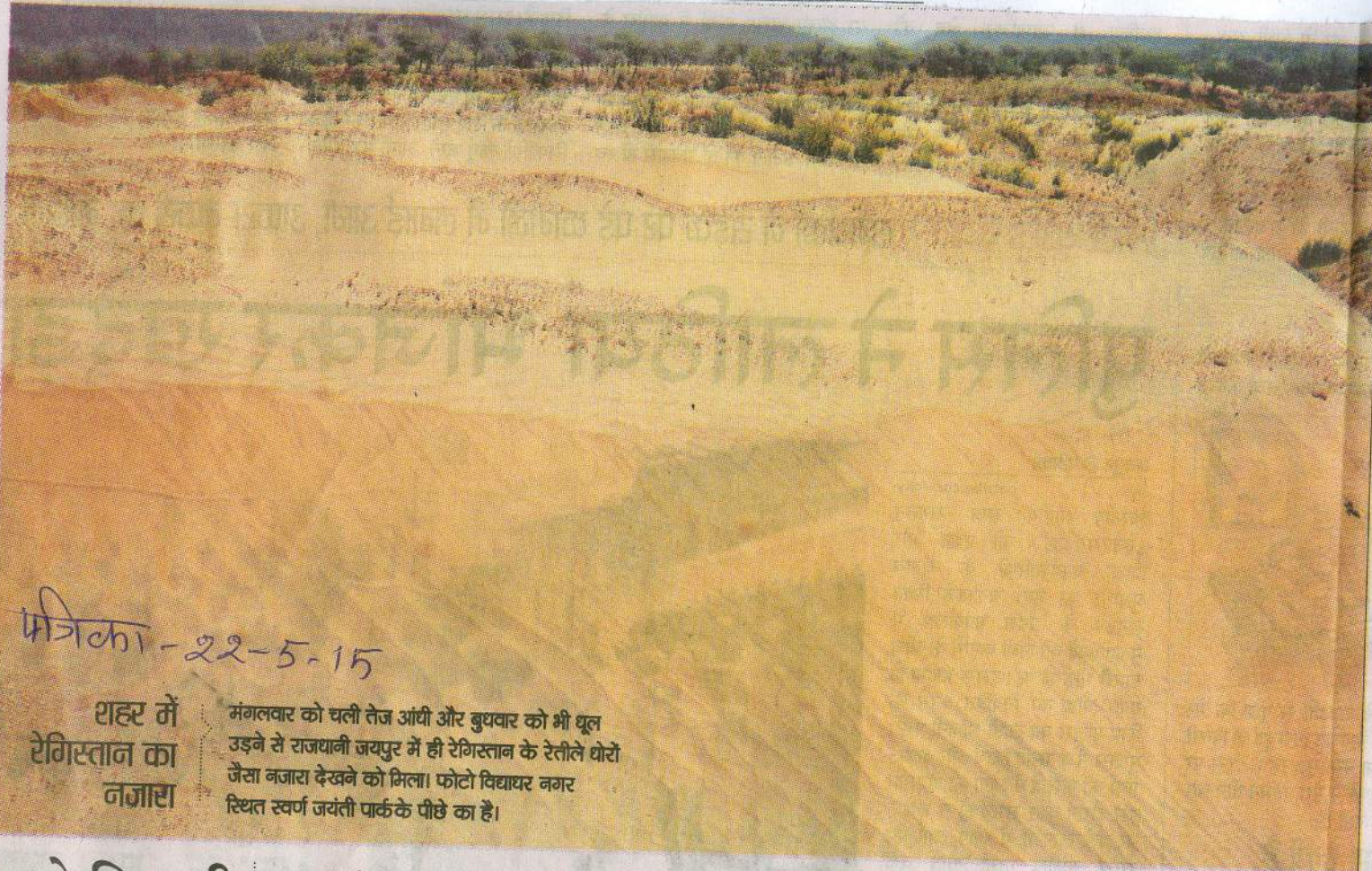
एक नया पक्ष गंगा सफाई अभियान से जुड़ने का रहा है। शवों की अंत्येष्टि, पूजा सामग्री और मूर्तियों के विसर्जन को लेकर धर्माचार्यों को विश्वास में लिया जा रहा है। कोशिश उनकी स्वीकृति से नई व्यवस्था बनाने की है। इसमें इकोफ्रेंडली शवदाह गृह का निर्माण, पूजा और मूर्ति विसर्जन के लिए उचित स्थान तय करने और अधजले शवों को गंगा में फेंकने की बजाय उनके उचित प्रबंधन की व्यवस्था भी शामिल है। 2022 तक गंगा के किनारे बसे सभी गांवों को 'खुले में शौच' से पूरी तरह मुक्त करने का संकल्प है। राष्ट्रीय गंगा निगरानी केंद्र का गठन एक अन्य पहल है। नदी के किनारों पर नदी नियामक नियमों को सख्ती से लागू करवाया जाएगा। गंगा ज्ञान केंद्र की स्थापना की जाएगी, जो नदी विज्ञान पर गंगा विश्वविद्यालय जैसी संस्था बनाएगी। जलीय जीवन की सुरक्षा की जा रही है जिसमें डॉल्फिन, घड़ियाल और कछुए शामिल हैं। बालू खनन पर नए नियम बनाने की भी योजना है।

► सबका सहयोग मिले

गंगा शुद्ध और प्रदूषणमुक्त हो, बाधामुक्त होकर अविरल बहे, इसी में भारत का हित है। इसके लिए भारत सरकार प्रयासरत है। लेकिन इस अभियान में जल विज्ञानी, भूगर्भशास्त्री, सलाहकार, नीति-निर्माता, पर्यावरणविद, गैरसरकारी संगठन, साधु-संत, गंगा के किनारे आजीविका चलाने वाले मछुआरे, मल्लाह, कृषक, मजदूर से लेकर देश के हर नागरिक को अपना योगदान देना होगा।

(लेखक केंद्रीय लघु एवं मध्यम उद्योग मंत्री हैं)

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.



पत्रिका - 22-5-15

शहर में
रेगिस्तान का
नजारा

मंगलवार को चली तेज आंधी और बुधवार को भी धूल उड़ने से राजधानी जयपुर में ही रेगिस्तान के रेतीले घोरों जैसा नजारा देखने को मिला। फोटो विद्याधर नगर स्थित स्वर्ण जयंती पार्क के पीछे का है।

दूसरे दिन भी चली धूल भरी हवा

प्रदेश के मौसम में बदलाव
जारी, कहीं बारिश तो कहीं
गर्मी ने किया परेशान

जयपुर @ पत्रिका

पत्रिका.com/city
प्रदेश में बुधवार को भी कहीं लू, कहीं बारिश तो कहीं धूल भरी हवाओं के कारण जनजीवन अस्त-व्यस्त रहा। कोटा और उदयपुर संभाग में तेज गर्मी के कारण लू के थपेड़ों से लोग बेहाल रहे। मौसम विभाग ने आगामी 24 घंटों के दौरान प्रदेश में कई स्थानों पर बारिश और धूल भरी आंधी चलने की संभावना व्यक्त की है। विभाग के अनुसार राजधानी का अधिकतम तापमान

43 डिग्री और न्यूनतम 27 डिग्री रहने की संभावना है।

तापमान में गिरावट

बुधवार को शहर का तापमान 3.0 डिग्री की कमी के साथ 42.2 डिग्री दर्ज किया गया। वहीं रात का तापमान 2.8 डिग्री की कमी के साथ 26.6 डिग्री सेल्सियस रहा। दोपहर में तेज गर्मी ने लोगों को परेशान किया। वहीं शाम को हल्की धूल भरी हवाओं के बीच कुछ देर के लिए बादल गरजे।

बिजली गिरने से बालिका की मौत

सूरजगढ़ पंचायत समिति के गांव लाडूदा में मंगलवार को आकाशीय बिजली गिरने से एक बालिका की मौत हो गई। दूधवा सरपंच मंजूबाला स्वामी ने बताया कि मंगलवार शाम करीब पांच बजे आए अंधड़ के बाद बरसात में कुछ बच्चे पेड़ के पास खेल रहे थे। इसी दौरान आकाशीय बिजली गिरने से बालिका उर्मिला पुत्री

मनीराम स्वामी निवासी फोगा (चूरू) की मौत हो गई।

यहां इतनी बारिश

मौसम विभाग के अनुसार भरतपुर, खेतड़ी, नीमकाथाना, फतेहपुर में 20-20 मिमी और कुम्हेर, पिलानी, लक्ष्मणगढ़, चिड़ावा, फागी, रामगढ़ शेखावाटी, सीकर तहसील, उदयपुरवाटी, बीकानेर, चूरू, लाडनू, इंगरगढ़ और पदमपुर में 10-10 मिलीमीटर बारिश दर्ज की गई।

मौसम हुआ खुशनुमा

राजधानी में बुधवार शाम करीब 5 बजे 70 किलोमीटर प्रति घंटा की रफ्तार से हवाएं चली। इस दौरान कहीं हल्की बूझबांदी तो कहीं बौछारें भी पड़ी। मौसम में ठंडक होने से पर्यटन स्थलों पर भी शाम को भीड़भाड़ देखी गई।

विमानों का टेकऑफ अटका

राजधानी में बुधवार शाम को आई आंधी के कारण हवाईअड्डे पर इंडिगों की कोलकाता, एयर एशिया का पुणे और स्पाइस जेट की दिल्ली जाने वाली फ्लाइट का टेकऑफ अटक गया। करीब पौने घंटे बाद शाम करीब 6:20 बजे विमानों को फिर से उड़ान की इजाजत दी गई।

अजमेर-पुष्कर में ओले

चित्तौड़गढ़ में प्रदेश का सर्वाधिक अधिकतम तापमान 46.3 डिग्री रहा। अजमेर में बारिश के साथ ही ओले गिरे। यहां शाम को कई जगह रेतीले अंधड़ के बाद 10 मिनट की बरसात के बीच ओलावृष्टि हुई। पुष्कर की पाराशर कॉलोनी और आसपास के क्षेत्रों में चने के आकार के ओले गिरे। किशनगढ़ में पांच से दस मिनट तक हल्की बौछारें पड़ीं।

प्रमुख शहरों का तापमान

अजमेर	42.1
पिलानी	39.8
कोटा	44.8
डबोक एपी	42.6
बाड़मेर	42.8
जैसलमेर	43.5
जोधपुर	42.3
बीकानेर	41.2
चूरू	41.2
गंगानगर	42.0

(अधिकतम
तापमान
डिग्री
सेल्सियस में)

News item/letter/article/editorial published on May-21.05.2015 in the

Hindustan Times
Statesman
The Times of India (N.D.)
Indian Express
Tribune
Hindustan (Hindi)

Nav Bharat Times (Hindi)
Punjab Keshari (Hindi)
The Hindu
Rajasthan Patrika (Hindi)
Deccan Chronicle
Deccan Herald

M.P.Chronicle
A a j (Hindi)
Indian Nation
Nai Duniya (Hindi)
The Times of India (A)
Blitz

and documented at Bhagirath(English)& Publicity Section, CWC.

UP, MP at war over sharing water from Bansagar dam

Uma Calls CMs To Delhi, But Yet To Get Response

Vishwa.Mohan@timesgroup.com

New Delhi: Uttar Pradesh and Madhya Pradesh appear to be on warpath over sharing water from the Bansagar dam across the Sone river. Last week, Madhya Pradesh flatly refused to share water with Uttar Pradesh due to the dispute over operational expenses, forcing the latter to knock at the Centre's door.

Though the Union water resources minister Uma Bharti has called a meeting of the chief ministers of both the states on Thursday to sort out the issue amicably, neither the UP nor the MP government confirmed participation of the CMs till late on Wednesday evening.

"It is expected that both the states will send their irrigation ministers and senior officers for the meeting," said an official, adding that the stand taken by the two state

SONE SUTRA

Water sharing from Bansagar dam across the river Sone

River Sone, a tributary of the Ganga, flows through Madhya Pradesh, Uttar Pradesh and Bihar

Bansagar dam is located in Satna (left bank) and Shahdol (right bank) districts of Madhya Pradesh

An agreement was signed by MP, UP and Bihar on September 16, 1973 for sharing water from the Bansagar dam



Annual irrigation benefits	In lakh hectare	
	MP (Rewa, Sidhi, Satna and Shahdol districts)	2.49
	UP (Sonbhadra and Mirzapur districts)	1.5
	Bihar (Bhojpur, Buxar and Rohtas districts)	0.94

governments this time is quite rigid as compared to the similar dispute two years ago.

The official said if the states don't budge from their respective positions, UP, being an aggrieved party, may even approach the water disputes tribunal. After being refused release of water from the dam, the UP government had last week written to the chairman of Central Water Commission (CWC), A.B.Pandya, requesting a suitable direction from the

Centre to the MP government.

Pandya said, "The UP government wants MP to release 2000 cusecs of water from Bansagar dam for two months into Sone river against its due share of one million acre-feet (MFA) of water from the dam. The UP government has said an acute crisis of drinking and irrigation water has arisen in Sonbhadra and Mirzapur districts due to severe heat and scarcity of rains." The CWC chairman told **TOI** that

the Centre would try for solution at Thursday's meeting.

The MP government had said it had not even stored UP's share of water in Bansagar dam because the latter had not agreed to share the "operation and maintenance expenses of the dam".

Under an agreement, signed by UP, MP and Bihar in 1973, 2 MAF out of total 4 MAF of water in the Bansagar Dam is meant for MP while one MAF each for UP and Bihar.

Central Water Commission
Technical Documentation Directorate
Bhagirath(English)& Publicity Section

725(A), North, Sewa Bhawan,
R.K. Puram, New Delhi – 66.

Dated 21.5.2015

Subject: Submission of News Clippings.

The News Clippings on Water Resources Development and allied subjects are enclosed for perusal of the Chairman, CWC, and Member (WP&P/D&R/RM), Central Water Commission. The soft copies of clippings have also been uploaded on the CWC website.

S. Maheshwari
21.5.15
Assistant Director (publicity)

Encl: As stated above.

~~Editor, Bhagirath (English) & Publicity~~

Om
21.5.15

Director (T.D.)

For information of Chairman & Member (WP&P/D&R/R.M.), CWC and all concerned,
uploaded at www.cwc.nic.in